शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विद्याओं में हारमोनियम की संगति

राकेश कुमार
हारमोनियम वादक,
संगीत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय,
सैक्टर–14, चण्डीगढ़–160014

हारमोनियम वर्तमान समय में भारतीय संगीत का सबसे लोकप्रिय वाद्य है। यह वाद्य बजाने में सुगम और अत्यन्त आसानी से उपलब्ध होने वाला वाद्य है, इसलिए यह जल्दी ही लोकप्रिय हो गया। यह कोई बहुत प्राचीन वाद्य नहीं है, इसका इतिहास केवल 200–250 साल पुराना है। यह पाश्चात्य मूल का भारतीय वाद्य है, चूँकि यह विदेशी वाद्य है, लेकिन भारतीय संगीत में इसका प्रयोग इस तरह से हुआ, कि यह भारतीय वाद्य बन गया।

देखा जाए, तो आज लगभग सभी प्रकार के संगीत कार्यक्रमों में चाहे वह विशुद्ध (भारतीय संगीत का ख्याल गायन हो या लोक संगीत का गायन हो, उपशास्त्रीय संगीत, ठुमरी, दादरा, गज़ल, कव्वाली, सूफी गायन हो, आप इस वाद्य को सब गायन विधाओं के साथ संगति वाद्य के रूप में मंच पर बजते हुए देख सकते है।

हारमोनियम का अविष्कार :

हारमोनियम का अविष्कार 1842 ई. में एलेक्जेंडर डिबेंन के द्वारा पेरिस में हुआ था। 19वीं शताब्दी के मध्य में ईसाई मिशनरियाँ जब भारत में आईं, तो अपने साथ फ्राँस में निर्मित हाथ धौंकनी वाले हारमोनियम तथा आर्गन भी लाईं। यह हारमोनियम नामक वाद्य यंत्र प्रायः भारतीय घरों में पाया जाता है, यह वाद्य एक जगह से दूसरी जगह लेकर जाना बहुत आसान है। यह सीखने में भी आसान है। पश्चिमी देशों में हारमोनियम की ख्याति 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चरमोत्कर्ष पर पहुंची। यह वाद्य मुख्यतः छोटे चर्च और चैपल्स में प्रसिद्ध (हुआ ,चूँकि वहाँ पर पहले पाईप ऑर्गन बजाया जाता था, जो वाद्य बहुत लम्बा और बहुत महंगा था, जबकि हारमोनियम का वजन सामान्य आकार के 'पियानो' से मुख्यतः कम होता है। आज जो हम हारमोनियम का जो रूप देखते है उसके आविष्कारक स्वर्गीय "श्री द्वारिकानाथ घोष" है। जिन्हे Dwarkin & Sons के नाम से जाना जाता है। इन्हे 'हाथभाथी' वाला हारमोनियम का अविष्कारक कहा जाता है। 1900 ई. के आसपास यह बहुत प्रसिद्ध हो गया था। अनेक प्रकार के हारमोनियम इस समय बजाए जा रहे थे। 1930 के मध्य में इलैक्ट्रानिक ऑर्गन ने हारमोनियम की सफलता को प्रभावित किया। हारमोनियम एक स्वतन्त्र रीड युक्त वाद्य है, जिसमें प्रत्येक स्वर के लिए स्वतन्त्र रीड लगे होते है, इसमें ध्वनि को उत्पन्न करने के लिए हवा को रीड में से होकर प्रवाहित करवाया जाता है।

हारमोनियम के प्रकार :

फर्शी हारमोनियम, स्केल चेंजर हारमोनियम, सफरी हारमोनियम, फोल्डिंग हारमोनियम, कपलर हारमोनियम, पाँवभाथी वाला हारमोनियिम इत्यादि।

भारतीय संगीत में हारमोनियम संगति वाद्य के रूप में :–

18 नवंबर 1882 ई में मराठी नाटक 'शकुंतला' जब रंग मंच पर आया, सभी परम्परागत वाद्यों के साथ हारमोनियम प्रमुख संगति वाद्य के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग किया गया। इसके वादक थे 'स्व. दादा मोडक' कालक्रम से उन्हे भारत के प्रथम संगतकार होने का गौरव प्राप्त हुआ।

उत्तर भारतीय संगीत में हारमोनियम का प्रयोग सर्वसाधारण से लेकर उच्चकोटि के सांस्कृतिक संगीत, शास्त्रीय–संगीत या रागदारी संगीत में होता है। वाद्य की इसी बात से ही महत्ता का पता चलता है। संगीत शिक्षास्तर से लेकर इसके व्यक्तिगत प्रदर्शन तक में इस वाद्य की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। वर्तमान समय में हारमोनियम वाद्य शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, सूफी संगीत इत्यादि में संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। चूँकि हम यहाँ पर शास्त्रीय संगीत की गायन विधाओं में हारमोनियम वाद्य का एक संगति वाद्य के रूप में प्रयोग के बारे में चर्चा कर रहे है तो सबसे पहले हम वो सभी शास्त्रीय संगीत की गायन विधाओं की चर्चा संक्षेप में करेंगे।

ध्रुवपद, ख्याल, झपताला, मध्यलय ख्याल , तराना, चतुरंग, ध्मार, इत्यादि गायन शैलियाँ शास्त्रीय संगीत की है। इनमें से ध्रुवपद व धमार के साथ हारमोनियम का प्रयोग नही होता । बाकी सभी गायन विधाओं के साथ हारमोनियम संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। हालाँकि शुरुआत में कुछ गायक कलाकारों ने इस चीज का विरोध किया, लेकिन बाद में धीरे–धीरे इसकी महत्ता बढने लगी।

शास्त्रीय संगीत के गायक कलाकारों के अलावा उपशास्त्रीय संगीत के गायक कलाकार हारमोनियम की संगति को पसंद करते है। उपशास्त्रीय संगीत की गायन विधाऐं : ठुमरी,कजरी, चैती, दादरा इत्यादि। इन सबके साथ अधिकांशतः सुलभता के कारण हारमोनियम को ही संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

गायन व वादन के साथ तो हारमोनियम की संगति के विषय में बात हो चुकी है, लेकिन नृत्य के साथ हारमोनियम एक संगति वाद्य के रूप में प्रयोग, अब हम चर्चा करेगे। नृत्य के साथ हारमोनियम का प्रयोग कब से हो रहा है यह कहना कठिन है लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि नाटक, नाटय संगीत के साथ ही नृत्य में भी इसका प्रयोग शुरू हुआ होगा। नृत्य के साथ हारमोनियम का प्रयोग मुख्य रूप में लहरा बजाने के लिए किया जाता है। नृत्य के साथ गायन के लिए भी हारमोनियम काफी सहायता प्रदान करता है। नृत्य में भाव प्रदर्शन करने के लिए वंदना, ठुमरी, दादरा इत्यादि की बंदिशों का गायन किया जाता है जोकि हारमोनियम वादक द्वारा ही गाया जाता है। अलग–अलग लय में लहरा देने के लिए हारमोनियिम बहुत उपयुक्त वाद्य है।

नृत्य नाटिका में हारमोनियम का प्रयोग परिप्रेक्ष्य (background) संगीत में किया जाता है। हारमोनियम में कॉर्डस ;स्वर संवाद, के द्वारा अलग–अलग रसों की निष्पत्ति की जा सकती है। जो नृत्य में बहुत उपयोगी सिद्ध होती है।

ताल वाद्य तबला, ढोलक, पखावज इत्यादि में जब एकल वादन होता है तब हारमोनियम या सांरगी का प्रयोग लहरा देने के लिए किया जाता है। हारमोनियम का प्रयोग स्वर एवं ताल वाद्य को मिलाने के लिए भी किया जाता है।

शैक्षणिक स्तर पर हारमोनियम का प्रयोग :

स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी इत्यादि स्तर पर हारमोनियम को एक संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। स्कूल में सुबह प्रार्थना में, समारोह में, कक्षाओं में संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है । शुरुआत में विद्यार्थियों को हारमोनियम के साथ ही सरगम गानी या बजानी इत्यादि सिखाया जाता है। College, University में Vocal as a subject है वहां भी कक्षाओं में जैसे तबला संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है ठीक उसी प्रकार हारमोनियम भी संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

इसके अलावा 15 अगस्त, 26 जनवरी , गांधी जयन्ती, यूथ फैस्टीवल इत्यादि में हारमोनियम का एक संगति वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

एकल वादन :

वर्तमान समय में तबला, गायन, सितार एकल वादन की तरह हारमोनियम भी एकल वादन के रूप में देखने सुनने में मिलता है। हारमोनियम में हम बड़ा ख्याल में एकल वादन पेश नहीं कर सकते, क्योंकि हारमोनियम में गले जैसी स्थिरता नही होती। हारमोनियम में झपताला, मध्यलय ख्याल इत्यादि को 35 से 40 मिनट तक बजा सकते है। इसके बाद धुन इत्यादि बजाकर समाप्ति कर सकते है।

इस प्रकार हम देखते है कि हारमोनियम को व्यवसायिक स्तर पर संगति के लिए एकल वादन के रूप में प्रयोग तो होता ही है इसके साथ–साथ यह शैक्षणिक स्तर पर भी अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है।